Vol. XII
Number-21

ISSN 2319-7129
(Special Issue) April, 2018

UGC Notification No. 62981

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

CamScanner

CONTENTS

The Inscriptional History of Basara, Nirmal District 1
K. Murali

Decline in Child Sex Ratio in Ahmednagar District Between 1991 to 2011 6
Dr. Prakash N. Salve

Working Capital Management and Growth of Microfinance in India 13
Ajeet Kumar

Water Conservation in Rajasthan a Social View Point 19
Rishabh Gahlot

Rethinking Growth Strategy and Tribal Health in India 23
Parvez Ali

Development Imperative Women Samakhya Program in Uttar Pradesh 26
Dr. Ram Priti Mani Tripathi

Sensitivity Index: In Context of Sentiment Analysis 31
Vijender Singh Chauhan and Shirin Akhter

Quasi Contract an Overview 34
Dr. Sanjay Kumar Baranwal

Northeast India as a Political Region the Colonial and Post-Colonial Construction 43
Moses Kharbithai

Subalterns Can Speak a Study of Select Young Indian Dalit Poets 51
Dr. S. C. Hajela

भारतीय समाज में धर्म के महत्व की प्रासंगिकता 57
डॉ. नीलम चौहान और डॉ. अन्जू रानी

पर्यावरण के संरक्षण में भारतीय उद्योग जगत के सराहनीय प्रयास 61
डॉ. नीलम चौहान

भारत में लोकतंत्र के भविष्यः डॉ. भीम राव अम्बेडकर 64
डॉ. उमेश प्रसाद यादव

लोकगीत और मानव जीवन 69
डॉ. कविता त्यागी

CamScanner

Capital Structure Analysis of Indian Automobile Companies Using Selected Ratios 73
Dr. Mahendra Sankhala

Theoretical Determination of Satellite Intensity Discrepancy in Copper Kβ X-Ray Lines 81
Lalit K. Dwivedi

Paradiplomacy in Canada and its Impact on Canadian Foreign Policy 86
Robin Mukherjee

Importance of Disaster Management Education in School Curriculum 95
Manish Kumar Shukla

Self Help Group and its Impact on Women Empowerment an Analytical Study 99
Dr. Rajnikant Trivedi

वस्त्र उद्योग द्वारा प्रदूषित जल का समुचित उपयोगः एक अध्ययन 107
राजेश नामा

Water Pollution and its Control 114
Dr. P. M. Kala

Water Conservation: Plan of Action and Result 125
Dr. Nasreen Anjum Khan

Studies in CNS Active Diazepines 130
Dr. Qudsia Bano

Research Publication a Study on the Awareness of Noise Pollution Among 8th & 9th Class Students in Secondary Schools 132
Neelofar

A Study of Human Relationship in the Fiction of Arun Joshi 142
Dr. Ravishankar Singh

A Study of Rich Like Us: An Exploration of the Political Views of Nayantara Sahgal 146
Dr. Ravishankar Singh

Innocence and Friendship in Times of the Holocaust Through The Boy in the Stripped Pyjamas 150
Dr. Vinu George

Measuring Enhancement of Academic Performance of Students Using Learning Analytics and Educational Data Mining 153
Tarun Dadhich and Dr. Dinesh Shrimali

Muriel Spark's Characters and Their Visionary Message 160
Dr. Ganesh Kumar Srivastav

CamScanner

Historical Hooghly Madrasah (1817-2016) and its Contribution Towards Spreading Education : Take a look at its two Hundred years of Celebration 164
Md. Ginnatulla Sk

A Study of E-Banking in Public and Private Sector Banks 170
Anand Kumar

प्रभात रंजन की कहानियों में अभिव्यक्त समाजः बोध 180
डॉ. श्याम प्रकाश आ. पांडे

भारत पाकिस्तान सम्बन्ध (कल आज और कल) 184
डॉ. आलोक पाण्डेय

शिक्षण एवं पाठ योजना 190
डॉ. प्रवीन भारद्वाज

युगवाणी 'कहानी सग्रंह दी कहानी 'संस्कृति' च अंधविश्वास 194
रूचि शर्मा

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के धर्मनिरपेक्षता पर विचार 196
डॉ. अयोध्या प्रसाद सिंह

Self Construal in Relation to Approval Motivation and Dependence Proneness: In the Context of Gender and Background Differences 199
Dr. R.S. Giri

Educational System in Iran Post Revolution-Challenges and Achievements 215
Tahir Ali

Vermi-Composting in Synergy with Organic Farming for Sustainable Agriculture 219
Neerja Masih

Bharati Mukherjee: An Immigrant's Struggle to Adapt to a New Culture 227
Dr. Anuradha Singh and Dr. Ashutosh

Indigenous Plants: A Reservoir for Anticancer Agents 232
Dr. Bineeta Yadav

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं में सशक्तिकरण की जागरूकता महत्वपूर्ण भूमिकाः एक अध्ययन 235
मो. सदरे आलम

कालिदास की जन्मभूमि : गढ़वाल 244
डॉ. श्रीमती कमलेश शर्मा

CamScanner

प्रभात रंजन की कहानियों में अभिव्यक्त समाजः बोध

डॉ. श्याम प्रकाश आ. पांडे*

साहित्यकार समाज का हिस्सा होता है। संवेदनशील साहित्यकार अपनी रचनाओं में अपने समय की परिस्थितियों, समस्याओं, दुःख-सुख, बदलती हुई मनः स्थितियों तथा मूल्यों से न तो तटस्थ रह सकता है, न ही उदासीन। जब उन सबको साहित्य में स्थान प्राप्त होता है तब उसे सामाजिक साहित्यिक समाज बोध की संज्ञा से अभिहित करते है। जीवन और साहित्य में निश्चित ही आदर्श का बड़ा महत्व हैं किंतु सामाजिक यथार्थ का महत्व उससे किसी भी तरह कम नहीं आँका जा सकता है। यथार्थवादी चित्रण ही साहित्यिक समाज बोध को गहन बनाकर सहृदय को अपने आप से जोड़ता है, साहित्य के साथ अपनेपन की अनुभूति का अहसास कराता है। साहित्य समाज का दर्पण है, यह कहते हुए विद्वानों का शायद यही मंतव्य होता है कि साहित्य समाज के ऐसे शब्दचित्रों को सहृदय के समक्ष प्रस्तुत करता है, जिनसे सामाजिक यथार्थ का बोध होता है।

यह सत्य है कि समाचार पत्रों की भाँति घटनाओं का प्रस्तुतिकरण न तो साहित्य में अपेक्षित होता है, न ही साहित्य के भीतर उसका कोई स्थान ही है, किंतु घटनाओं के माध्यम से ही मानवीय मन तथा समाज के मानस की पहचान होती है। यह भी निश्चित है कि साहित्यकार की अनुभूतियाँ वैयक्तिक रूप में होकर भी समाज के माध्यम से ही आकार ग्रहण करती हैं। सृजनशील साहित्यकार अपनी इन्हीं जीवनानुभूतियों, समाज-बोध एवं मानस बिंबों के सहारे मानवीय मन की तह तक जाकर उसके भीतर के यथार्थ को न केवल स्वयं अनुभव करता है, बल्कि अपने साहित्य के माध्यम से सहृदय सामाजिक तक भी पहुँचाता है। हिंदी के गणमान्य साहित्यकारों में प्रभात रंजन का नाम ऐसे ही एक संजीदा कहानीकार के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिनकी कहानियों के संदर्भ में डॉ. विजयमोहन सिंह लिखते हैं कि – "इनकी इन कहानियों में ..... आज की वास्तविकता के प्रति एक वयस्क व्यंग्य बोध है।" अतः यह तो निश्चित है कि कहानियों में वास्तविकता का पुट है, जिसे व्यक्त करते हुए एक व्यंग्यात्मकता का भाव कहानीकार अभिव्यक्त करते हैं।

प्रभात रंजन के दो कहानी संग्रह 'जानकी पुल' और 'बोलेरो क्लास' अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। सृजनात्मक कार्य हेतु प्रेमचंद सम्मान तथा सहारा समय कथा सम्मान से आपको पुरस्कृत किया जा चुका हैं। एक कहानीकार के रूप में आपकी सूक्ष्म एवं गहन दृष्टि, सामाजिक सरोकार, संवेदनशीलता एवं अनुभूति को सहजता से अभिव्यक्ति देने की कला के दर्शन प्रत्येक स्थान पर होते हैं। प्रभात रंजन ने अपनी कहानियोँ के माध्यम से जिस सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की है उसे यहाँ देख सकते हैं।

अपने जीवन से प्रत्येक मनुष्य को प्रेम होता है, उससे भी बड़ा होता है मनुष्य का स्वबोध, जो मनुष्य को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा प्रदान करता है। लेकिन बाजारीकरण के युग में मनुष्य के स्वाभिमान से अधिक महत्व अर्थ को प्राप्त हो गया है। वर्तमान आपाधापी के युग में अपना कैरियर बनाने, उसे बचाये रखने एवं अपने अहम् को बनाये रखने हेतु मानवीय संबंधों के धरातल पर एक प्रकार का बिखराव स्पष्ट नजर आता है। जीवन के इसी यथार्थ को 'मोनोक्रोम' कहानी में अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। कहानी के मुख्य पात्रों राहुल और लिच्छवि ने कभी प्रेमी-प्रेमिका के रूप में अपना जीवन बिताते हुए अनेक वादे किये थे। बाद में दोनों ने अलग-अलग रास्ते अपना लिए थे। राहुल के जीवन में लेखक के रूप में प्रस्थापित होने में अनेक उतार-चढ़ाव आये थे। लिच्छवि

*हिंदी विभाग, अध्यक्ष कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय आर्वी, जि. वर्धा।

CamScanner

के माध्यम से उसे डेली सोप में लेखक के रूप में मौका मिल सकता था। लेकिन जब उस विषय में लिच्छवि से थोड़ी सी मदद मांगी तब "राहुल ने महसूस किया लिच्छवि की आवाज में अपने 'कुछ होने' का अहसास बढ़ गया था। राहुल पहली बार इस मुलाकात पर शर्मिन्दा महसूस कर रहा था। जैसे लग रहा था सफलता की इच्छा ने उसे भिखमंगा बना दिया हो। बातचीत इसी मोड़ पर खत्म की जा सकती थी। पर इससे नुकसान तो उसका ही होता न। या तो वह अपना स्वाभिमान बचा सकता था या कैरियर। बरसों की असफलताओं से वह जान गया था कि स्वाभिमान में बचाने लायक कुछ बचा नहीं है।"[1] यह स्थिति वर्तमान समाज के एक ऐसे यथार्थ को वाणी देने का प्रयत्न है, जिससे नयी पीढ़ी का बच पाना संभव नहीं है क्योंकि गलाकाट स्पर्धा के युग में बाजार ने प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वयं को एक महत्वपूर्ण प्रॉडक्ट के रूप में सिद्ध करना अनिवार्य कर दिया है। प्रत्येक व्यावसायिक ऐसा प्रॉडक्ट चाहता है जो कम से कम लागत का हो और अधिकतम लाभ प्रदान कर सके।

मानवीय जीवन में सामाजिक व्यवस्था को चलाने के लिए आवश्यकता होती है, प्रशासन की और प्रशासन की बागड़ोर होती है राजनीतिज्ञों के हाथों में। राजनीति और प्रशासन हमारे समाज के दो ऐसे पहलू हैं, जिनके बिना समाज की गाड़ी का चक्का इंच भर भी नहीं चल सकता। मानवों ने जीवन में जटिल सामाजिक क्रियाकलापों को आपस में सुसंबद्ध करने हेतु दोनों का महत्वपूर्ण स्थान था, है तथा रहेगा। लेकिन वर्तमान में जनसामान्य राजनीति तथा प्रशासन दोनों ही पर से तेजी विश्वास खो रहा है। उदारीकरण से निर्मित बाजारीकरण के अंतर्गत लगातार भष्ट्राचार के आँकडों और विकास के नाम पर हो रही लूट ने जहाँ देश के राजनीतिज्ञों की विश्वासहार्यता पर प्रश्न-चिह्न लगा दिये हैं, वहीं प्रशासन भी इन्हीं राजनीतिज्ञों के हाथों की कठपुतली-सा कार्य करने में अपनी धन्यता मान रहा है, ऐसा स्पष्टतः दिखाई देता है। जो विरोध में सिर उठाता है, उसके सिर को काटने में भी राजनीतिज्ञ बाज नहीं आते हैं। परिणामस्वरुप हमारा समाज इन दोनों पर से तेजी से विश्वास खो रहा है। 'फ्लैशबैक' कहानी का नायक ओंकार ठाकुर पुराने दिनों की याद करता है जब वह नेता बनने की कोशिश करने में लगा था तो उसे अपने दोस्त श्याम भवशिंका की बात याद आती है कि – " हम लोग पुलिस वाले और खादी वालों को दूर से ही पहचानना सीख जाते हैं। कब उनकी चाल बदल जाए।"[2] वर्तमान समय में सत्याग्रह तथा अन्य आंदोलनों पर जैसी राजनितिक प्रतिक्रिया देखी जा रही है उसके चलते मनुष्य अपने आप से तथा व्यवस्था पर से भी विश्वास खोता जा रहा है। यह हमारे भारतीय जन-जीवन का ऐसा यथार्थ है, जिसे हर कोई महसूस करता है।

सभ्यता के विकास में मानवीय मूल्यों की बलि चढ़ना कोई नई खबर नहीं है। सभ्यता के विकास के इस पूर्णतः पूंजीवादी दौर में मनुष्य के भीतर रातों-रात धनवान बनने, प्रसिद्धि पाने की जो लालसा तेजी से पैदा की जा रही है, उसके परिणामस्वरूप जो कुछ घटित हो रहा है, उसकी कहानी मीड़िया पर रोजाना हम देख, सुन और पढ़ सकते हैं। आधुनिक विकास के साथ-साथ देश में सूचना संसाधनों का जाल भी बहुत तेजी से विकसित होता चला गया। समाचार पत्र, समाचार चैनल आदि लूटपाट, धोखाधड़ी आदि की खबरों से भरे होते हैं। जिसका कारण शायद मानवीय समाज की वह मानसिकता है, जो अपने को समाज के उसी आइने में देखना चाहता है। आज यदि कोई मूल्यों की बात करे तो लोग अपने आप को सर्व सामान्य मानव या आम आदमी कह कर नैतिक मूल्यों का समर्थन करने वाले का मजाक बनाना आरंभ कर देते हैं। क्या यही विकास का पैमाना है कि मनुष्य अपनी मनुष्यता ही छोड़ दे? प्रभात रंजन की 'फ्लैशबैक' कहानी में लेखक इसकी ओर अंगुली-निर्देश करते हैं कि – "अखबार के दूसरे-तीसरे पन्ने पर हर रोज ऐसी असंख्य खबरें मैं बरसों से पढ़ता रहा हूँ, जिनमें वृद्ध दम्पतियों की घरेलू नौकर द्वारा हत्या के बारे में कुछ होता है या दहेज के लिए किसी स्त्री को जिन्दा जला देने या फाँसी पर लटका देने के सम्बन्ध में कुछ छपा होता है...." "या फिर

CamScanner

तरह-तरह की लूटपाट की खबरें या धोखाधड़ी के नये-नये तरीकों को लेकर खबरे होती है। जिन्हें मैं यह जानने के लिए बड़े ध्यान से पढ़ता हूँ कि हमारे देश ने कितनी तरक्की कर ली है...तरह-तरह से इंटरनेट है पर हैक कर लिए जाने सम्बन्धी खबरें...एक तरह से अपने प्रिय दैनिक के वे दो पन्ने मेरे लिए स्थानीय और राष्ट्रीय प्रगति का आइना बन गये हैं।"[3]

एक मानव तथा दूसरे मानव के बीच निरंतर संबंध तेजी से बदल गये है। केवल शेष है तो एक-दूसरे के नजदीक होने का एक आभास। व्रर्तमान का एक अन्य यथार्थ है - आभासी दुनिया, जिसके सहारे दुनिया के एक गाँव में तब्दील होने का आभास निरंतर बाजार द्वारा कराया जा रहा है। जीवन में मोबाईल और इंटरनेट के एस.एम.एस. और ई-मेल तथा सोशल-साईटस् के नाम से मशहूर वेब-दुनिया ने एक आभासी संसार का निर्माण किया है। यह आभासी दुनिया निश्चित ही, हमने कभी जिन्हें रूबरू देखा तक नहीं उनके साथ दोस्ती का मौका भी प्रदान करती है। साथ ही हम अपने जानने वालों के संदर्भ में अपडेट रह सकते हैं। 'सोप-ऑपेरा' कहानी का पात्र डॉ. अधीर प्रसाद सिंह जिसके बारे सोचता है कि – "यह हमारी छोटी-सी आभासी दुनिया है, जिसमें कभी-कभी मुझे लगता है जैसे हम सब बस खेल रहे हो, आभासी खेल, केवल आर.के. ही नहीं, मैनाक, जो अब कलकत्ता में है, हिमांशु मुम्बई में, जमशेद बंगलौर में। हम बरसों से नहीं मिले हैं।"[4] इसी आभासी दुनिया में हम तेजी से विकसित हो रहे हैं, दूसरे किसी शहर में बैठा पुत्र अपने पिता को इसके माध्यम से अपनी तबीयत की देखभाल करने की सलाह सामने रखी कम्प्यूटर स्क्रीन पर ऐसे देता है, मानो सामने बैठकर पिता की तबीयत देख रहा हो। और व्यस्ततम आपाधापी के युग में शायद एक-दूसरे से जुड़े रहने के ये साधन अच्छे हो परंतु इससे संवेदनाओं के समाप्त होने का एक नया युग भी पैदा हुआ है, जो एक ऐसा ही समकालीन अपने ई-मेल के जरिये निरंतर दोस्तों से जुड़ा रहने वाला आर.के. उर्फ रामकिशन अपनी पीड़ा को किसी से नहीं बाँट पाता है और एक दिन अन्य मित्रों से रामकिशन के बारे अलग-अलग और विरोधाभासी बाते ई-मेल के जरिये डॉ. अधीर प्रसाद सिंह को पता चलती है परंतु सचमुच आभासी दुनिया के ये संबंध कुछ दे पाते है? इसी पर डॉ. अधीर प्रसाद सिंह विचार करता है कि – "रामकिशन पता नहीं कहाँ होगा? ऐसा लगने लगा था हम उसके दोस्त नहीं थे...हम सब आभासी मित्रता को बनाये रखने के लिए उसकी जिन्दगी पर आभासी सोप-ऑपेरा लिख रहे थे।"[5]

मानव जीवन में ईजी मनी की चाहत एक ऐसा ही यथार्थ है। प्रत्येक व्यक्ति बिना मेहनत के कुछ मिल सके उसके लिए प्रयत्न करता रहता है। कभी-कभी अति मेहनती व्यक्ति भी जब यह देखता है कि अपने पिता आदि द्वारा हाड़-तोड़ मेहनत करने बाद भी जीवनावश्यकताएं पूरी नहीं हो पा रही है। तब मन में एक ग्रंथी बन जाती है, जिसके चलते सामान्यतः उनके मन में एक ऐसी भावना होती है कि कम से कम समय एवं मेहनत में अधिकाधिक पैसा कमाया जा सके। इसी भावना के चलते अनेक युवा अवसरवादी राजनीतिज्ञों के चंगुल फँसकर उनके काले कारनामों में साथ देने हेतु तैयार हो जाते हैं। राजनीतिज्ञों से संपर्क बनाकर कार्य विशेष के लिए कंपनियाँ खोलना और उसके माध्यम से पैसे बनाना, उदारीकरण के इस युग का एक नया यथार्थ है। आज युवा वर्ग भी ऐसे ही ईजी मार्ग की तलाश में रहता है। काले धन को सफेद करने हेतु राजनीतिज्ञ किस प्रकार से धन का उपयोग करते हैं, 'ईजी मनी' नामक कहानी के माध्यम से उसे जाना जा सकता है, कहानी का पात्र कल्पान्त काम की तलाश में फिल्मों का रूख करता है, फिल्मों में असफल हो जाने के कारण मंत्रीजी के साथ उठना-बैठना आरंभ करता है, जिसका फायदा उसे मिलता है। नेताजी उसे पोस्टर एवं पार्टी के कामों की हिंदी में सूची लगवाने का कार्य सौंपते हैं। अरबों रुपयों का कार्य एक साथ न देकर उसे आरंभ में कुछेक गाँवों में काम करने का ठेका मिलता है। मंत्रीजी बताते है कि उनकी पार्टी ने सारे देश में गाँवों में

CamScanner

इस प्रकार के विज्ञापन करने का कार्य उन्हें सौपा है, परंतु टेक्स विभाग वालों से बचने हेतु सारा काम धीरे-धीरे कराना पडेगा। कल्पान्त अपनी कंपनी के माध्यम से काम अपने हाथ में लेकर कार्य दोस्तों में बाँटकर सबको ईजी मनी कमाने का अवसर देता है।

समाज का एक ऐसा ही कटू यथार्थ नारी का जीवन है। नारी को समाज में सदियों से बेचा-खरीदा जाता रहा है। नये-नये तरीकों से लड़कियों के जीवन को बर्बाद करने में पौरुषिक मानसिकता कैसे कार्य करती है, वर्तमान चकाचौंध वाले जीवन में इन कार्यक्रमों के नाम पर युवतियों के बर्बाद होते जीवन की कथा के एक ऐसे यथार्थ को सामने लाती हैं, जिसे सामान्य नजरों से देखा जाना संभव नहीं हो पाता है। 'मिस लिली' कहानी के इस यथार्थ को वाणी देते हुए फेकू मंडल ने जो कहा वह विचारणीय है – "अरूण चौधरी ने लिली को पहले अपने प्रेम जाल में फँसाया। ... टीवी चैनल द्वारा प्रतियोगिता आयोजित किये जाने सम्बन्धी पोस्टर अरूण चौधरी ने ही लगवाये थे। उसने लड़कियों के साथ-साथ वहाँ(नेपाल) ले जाकर लिली ठाकुर को भी बेच दिया था।"[6]

सदियों से मानव समाज को मूर्ख बना कर कुछ लोग अपना उल्लू सीधा करते आये हैं। चाहे भगवान के नाम पर हो, चाहे बाबाओं या आत्माओँ के नाम पर। लेकिन सहज विश्वासी भारतीय ग्रामीण समाज आज भी ऐसे लोगों के बहकावे में आ जाता है। 'बंडा भगत की उर्फ अथ कथा ढेलमरवा गोसाई' कहानी में एक ऐसे ही यथार्थ से परिचय होता है। राजमजदूर सुन्नर दास का लड़का रामचरण पढ़-लिख कर डी.एम. के दफ्तर में नौकरी पर लग गया। अपने अच्छे स्वभाव के चलते नये आने वाले डी.एम का खास अर्दली बन गया। परिणाम यह हुआ कि कल तक जिले के हजारों चतुर्थ वर्ग कर्मचारियों की तरह गुमनाम रामचरण दास एक दिन ऐसे प्रसिद्ध हुआ कि जिले भर के लोग उसको न केवल पहचानने लग, रामचरण जी कहकर बुलाने भी लगे। जिसका फायदा उठाया गाँव के भूमिहार जमींदार स्व. कामेश्वर सिंह के बेटे लक्ष्मेश्वर सिंह तथा पोते साजन सिंह ने। साजन सिंह ने रामचरण के माध्यम से तथा उसी की गारंटी पर डी.एम. से लोन मंजूर करवाया। लोन की रकम वापस नहीं चुकाई। जिसके संबंध में रामचरण किसी से कुछ भी नहीं कह सका था। वह पागलों की भाँति गाँव में घूमता तथा एक पेड़ के नीचे दिन भर बैठा रहता था। बाद में अपने नजदीक आनेवालों पर ढेले मारने लगा। एक दिन एक दुर्घटना में रामचरण मारा गया अथवा मरवा दिया। बाद में लक्ष्मेश्वर सिंह तथा साजन सिंह ने उसे ढेलमरवा गोसाई के नाम से प्रसिद्धि दिलवा कर उसका एक मंदिर बनवा दिया जिसकी आमदनी से भूमिहार पिता-पुत्र लाभ लेने लगे।[7]

सारांश यह है कि मानवीय स्वभाव की कमियों तथा कमजोरियों, व्यवस्था की कमियों तथा तेजी से मानव के मन में घर करते बाजार की शक्तियों से परिचालित होकर अनेक बार मानव स्वयं ही अपनी तथा समाज की हानि करता है। मानव मन यदि इसे समझ ले तो अनेक सांसारिक समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

संदर्भ-सूची

1. जानकीपुल(कहानी संग्रह), पृ.13, भारतीय ज्ञानपीठ,18, इन्स्टीटयूशनल एरिया लोदी रोड, नयी दिल्ली-3 पहला संस्करण,2008
2. जानकीपुल (कहानी संग्रह), पृ.18, पहला संस्करण, 2008
3. जानकीपुल (कहानी संग्रह), पृ.16, पहला संस्करण, 2008
4. जानकीपुल (कहानी संग्रह), पृ.49, पहला संस्करण, 2008
5. जानकीपुल (कहानी संग्रह), पृ.56, पहला संस्करण, 2008
6. जानकीपुल (कहानी संग्रह), पृ.127, पहला संस्करण, 2008
7. बंडा भगत की उर्फ अथ कथा ढेलमरवा गोसाई, कहानी, www.hindisamay.org

CamScanner